क्रांति समय
हिन्दी दैनिक अखबार में विज्ञापन, प्रैस नोट, जन्म दिन की शुभकामनाएँ, या अपने विस्तार में किसी भी समस्या को अखबार में प्रकाशित करने के लिए संपर्क करें:-
4-0 ब्लोक, आगाम नवकार कॉम्पलेकक्ष, नीयर सचिन रेल्वे स्टेशन,सचिन, सूरत-394230
मो. 9879141480

दैनिक
# क्रांति समय

RNI.No. : GUJHIN/2018/75100

क्रांति समय
हमारे यहां पर एल.आई.सी., कार-बाईक-ट्रक का इन्सयोरेंशन, रेल टिकट, एयर टिकट बनवाने के लिए संपर्क करें:-
4-0 ब्लोक, आगाम नवकार कॉम्पलेकक्ष, नीयर सचिन रेल्वे स्टेशन,सचिन, सूरत-394230
मो. 8980974047

संपादक : सुरेश मौर्या मो. 9879141480
E-mail: krantisamay@gmail.com
सूरत, वर्ष: 1 अंक: 181, बुधवार, 25 जुलाई, 2018, पेज: 4, मुल्य 1 रु.
ऑफिस:- 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात
Email: krantisamay@gmail.com Web site : www.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

## सार समाचार

### पद्मभूषण महाकवि गोपालदास नीरज की अस्थियां हरिद्वार में विर्सजित

**गढ़ ( एजेंसी )।** काव्यमंच से कभी इन पंक्तियों को पढ़ने वाले पद्मभूषण महाकवि गोपालदास नीरज की अस्थियां मंगलवार को हरिद्वार में विर्सजित कर दी गईं। विसर्जन से पहले अस्थि कलश बेटे नीरज गुंजन के हरिद्वार स्थित आवास पर रखा गया। पद्मभूषण महाकवि गोपालदास नीरज का 94 वर्ष की आयु में दिल्ली स्थित एम्स में निधन हो गया था। वह पिछले कुछ दिनों से बीमार थे। गुरुवार 19 जुलाई को उन्होंने आखिरी सांस ली थी। शनिवार को उनका पार्थिव शरीर दिल्ली से अलीगढ़ लाया गया था। यहां जनकपुरी आवास से अंतिम यात्रा शुरू होकर नुमाइश ग्राउंड स्थित कृष्णांजलि नाट्यशाला में लोगों की भीड़ अंतिम दर्शन के लिए उमड़ी थी। जिसके बाद मोक्षधाम में अंतिम संस्कार किया गया। मंगलवार तड़के पुत्र नीरज गुंजन, पौत्र पल्लव नीरज व कवि नीरज के प्रशंसक अस्थि लेकर हरिद्वार के लिए रवाना हुए थे। करीब 11 बजे बजे हरिद्वार में शिवालिक नगर में नीरज गुंजन अपने घर पिता का अस्थि कलश लेकर पहुंचे। जहां स्थानीय लोगों ने अंतिम दर्शन कर अस्थि कलश पर पुष्प अर्पित किए। दोपहर 12 बजे परिजन हर की पौड़ी स्थित ब्रह्म कुंड पहुंचे। जहां अस्थि विसर्जन संस्कार किया गया। जिसके बाद अस्थियों और चिता की राख को गंगा में प्रवाहित कर दिया गया। इस दौरान नासिर अब्बास, राकेश सक्सेना आदि मौजूद थे।

### तंबाकू उत्पाद रखने वाले छात्रों के अभिभावक होंगे तलब

**नई दिल्ली ( एजेंसी )।** दिल्ली के स्कूलों में पढ़ने वाले छात्र जिनके पास तंबाकू उत्पाद मिलेंगे, उनके अभिभावकों को तलब किया जाएगा। शिक्षा निदेशालय ने सभी स्कूलों को तंबाकू मुक्त क्षेत्र बनाने के तहत ऐसा करने का निर्देश दिया है। निदेशालय की ओर से सभी स्कूलों को जारी संदेश में कहा गया है, कि हम सभी इस बात से अवगत हैं कि तंबाकू भारत में मौत की बड़ी वजहों में से एक है। मलेरिया, डेंगू, टीबी और एचआईवी / एड्स बीमारियों से कुल मिलाकर जितनी मौतें होती हैं, उनसे कहीं ज्यादा मौतें तंबाकू के विभिन्न रूपों में सेवन से होती हैं। निदेशालय ने स्कूलों को टोबैको फ्री जोन (तंबाकू मुक्त क्षेत्र) बनाने के लिए सभी स्कूलों के प्रधानाचायरे को कुछ निश्चित दिशा निर्देश पालन करने का निर्देश दिया है। इसके तहत स्कूलों को अपने परिसर को टोबैको फ्री जोन (तंबाकू मुक्त क्षेत्र) बनाने रखने के लिए स्वास्य योजना नोडल अधिकारी नियुक्त करने को कहा गया है और उन्हें परिसर में टोबैको फ्री जोन (तंबाकू मुक्त क्षेत्र) और नो स्मोकिंग या ''धूम्रपान न करें' का बोर्ड लगाने को कहा गया है।

### कुंडेसर चट्टी कांडः साक्ष्य के अभाव में बृजेश व त्रिभुवन सिंह बरी

**गाजीपुर।** कुंडेसर चट्टी कांड मामले में साक्ष्य के अभाव में न्यायालय ने बृजेश सिंह और त्रिभुवन सिंह को बरी कर दिया। मंगलवार को एडीजे द्वितीय के यहां पेशी के दौरान भारी सुरक्षा बल तैनात रहा। मंगलवार सुबह बृजेश सिंह को कड़ी सुरक्षा में वाराणसी से गाजीपुर जिला एवं सत्र न्यायालय लाया गया। इसके एक घंटे बाद त्रिभुवन सिंह भी एडीजे द्वितीय की कोर्ट में पेश किया गया। 1991 के कुंडेश्वर चट्टी कांड में दोनों की पेशी हुई। साक्ष्य के अभाव में न्यायालय ने बृजेश सिंह और त्रिभुवन सिंह को बरी कर दिया है। वर्ष 1991 विधानसभा चुनाव के दौरान दो मई की रात मुख्तार अंसारी के भाई अफजाल अंसारी के काफले पर अंधाधुंध फायरिंग हुई थी। इस फायरिंग में तीन लोगों की मौत हो गई थी। पुलिस विवेचना में बृजेश, त्रिभुवन, अनिल सिंह का नाम प्रकाश में आया था लेकिन घटना में कोई गवाह सामने नहीं आया। वादी भी मुकदमा लिखाने के बाद से फरार है। उस पर पुलिस और सीबीआई ने इनाम घोषित किया है।

### यूपी कैबिनेट मीटिंगः गांवों में परिवार को रोज मिलेगा 70 ली. साफ पानी

**लखनऊ।** गांवों में एक परिवार को प्रतिदिन 70 लीटर शुद्ध पानी, कैबिनेट मंगलवार को मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक हुई। बैठक में बुंदेलखंड और विन्ध्य क्षेत्र के गांवों में प्रति परिवार 70 लीटर पेयजल प्रतिदिन देने का फैसला लिया गया। इसके साथ छह और फैसलों पर मुहर लगी।

## कोलकाता में ढही इमारत, दो की मौत, कई घायल

*प्रत्यक्षदर्शियों और दमकल विभाग के कर्मचारियों के मुताबिक सियालदाह क्षेत्र के बैताखाना बाजार में सोमवार तड़के करीब 100 वर्ष पुरानी एक 2 मंजिला जर्जर इमारत ढह गयी। इस हादसे में मारे गए दोनों व्यापारियों की पहचान गोपाल नस्कर और माणिक जन के रूप में की गयी है। दोनों की उम्र करीब 50 के आस-पास बताई जा रही है। भारी बारिश के कारण दक्षिणी बंगाल के ज्यादातर हिस्से प्रभावित हुए हैं। मछुआरों को गहरे समुद्र में नहीं जाने की सलाह दी गयी है। दमकल विभाग के कर्मचारियों ने इमारत के मलबे में फंसे घायल लोगों को निकालकर एनआरएस अस्पताल में भर्ती कराया। कोलकाता नगर निगम ने काफी पहले से ही इस इमारत को खतरनाक घोषित कर दिया था। इस इमारत में कई किराने की दुकानें थीं। प्रत्यक्षदर्शियों और दमकल विभाग के कर्मचारियों के मुताबिक सियालदाह क्षेत्र के बैताखाना बाजार में सोमवार तड़के करीब 100 वर्ष पुरानी एक 2 मंजिला जर्जर इमारत ढह गयी। इस हादसे में मारे गए दोनों व्यापारियों की पहचान गोपाल नस्कर और माणिक जन के रूप में की गयी है। दोनों की उम्र करीब 50 के आस-पास बताई जा रही है।*

»» पानी डालकर किया निष्क्रिय

## यूपीः डीएम कार्यालय में बम मिलने से हड़कंप,

**बांदा ( एजेंसी )।** उत्तर प्रदेश में बांदा जिलाधिकारी के कार्यालय में सोमवार शाम बम मिलने से हड़कंप मच गया। आनन-फानन में मौके पर पहुंचे पुलिस अधिकारियों ने बम को पानी में डालकर निष्क्रिय कर दिया। नगर पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) राघवेंद्र सिंह ने मंगलवार को बताया कि सोमवार शाम किसी ने जिलाधिकारी के कार्यालय परिसर में खुले में एक देशी पटाखानुमा बम रख दिया था।

फरियादी श्रवण तिवारी ने बम देखते ही कर्मचारियों को सूचित किया जिसके बाद बम निरोधक दस्ते और पुलिस अधिकारियों ने उसे पानी में डाल कर निष्क्रिय कर दिया। उन्होंने बताया कि लाल रंग के पटाखानुमा बम में बारूद का पलीता लगा हुआ था, संभवत: इस पलीता में आग लगने से विस्फोट होता होगा। सीओ ने नक्सली या खूंखार बदमाशों की करतूत को नकारते हुए कहा कि किसी शरारती तत्व ने यह हरकत की है।

सीसीटीवी फुटेज के जरिए मामले की जांच की जा रही है।

गौरतलब है कि जिस समय यह देशी बम बरामद हुआ है, उस समय जिलाधिकारी दिव्य प्रकाश गिरि कई विभागीय अधिकारियों साथ अपने सभागार में बैठक कर रहे थे और कुछ देर बाद वहां राजस्व आयुक्त भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए पहुंचने वाले थे।

## कई मार्ग भारी वाहनों के लिए रहेंगे प्रतिबंधित

**नई दिल्ली ( एजेंसी )।** यातायात पुलिस ने कांवड़ियों व आमजनों को किसी तरह की परेशानी न हो, इसके लिए उसने पूरी तैयारी कर ली है। इस दौरान परिवहन व्यवस्था सामान्य रखने के लिए कई मागरे पर व्यावसायिक वाहनों का प्रवेश प्रतिबंधित रहेगा। इसके अलावा कई जगहों पर मार्ग बदले जाएंगे। संयुक्त पुलिस आयुक्त आलोक कुमार (यातायात) के मुताबिक कांवड़ियों की आवाजाही वाले प्रमुख मार्ग चिह्नित कर लिए गए हैं।

इन मागरे पर अतिरिक्त यातायातकर्मी कांवड़ियों की आवाजाही के दौरान परिवहन व्यवस्था सुचारु चलती रहे, इस पर खास ध्यान देंगे। इस दौरान पुलिसकर्मी वीडियो व कैमरों से भी लैसे होंगे।

यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों की वीडियो रिकार्डिंग व फोटोग्राफी कराई जाएगी और उनका चालान भी किया जाएगा। जिन रास्तों से गुजरेंगे कांवड़िए : बॉर्डर, शाहदरा फ्लाईओवर, सीलमपुर टी-प्वाइंट, कश्मीरी गेट बस अड्डा, फ्लाईओवर, बुलर्वड रोड, रानी झांसी रोड, फैज रोड, वंदेमातरम मार्ग, धौलाकुआं, एनएच-8 व रजोकरी बार्डर से हरियाणा में प्रवेश करेंगे। भोपुरा बार्डर, वजीराबाद रोड, लोनी फ्लाईओवर, गोकुलपुरी टी-प्वाइंट, 66 फुटा रोड, सीलमपुर टी-प्वाइंट, एनएच-1 और न्या बस अड्डा पुल। महाराजपुर बार्डर रोड नंबर 56, गाजीपुर बार्डर एनएच-24, रिंग रोड, मथुरा रोड, बदरपुर बार्डर होकर हरियाणा में प्रवेश करेंगे। कालिंदी कुंज, मथुरा रोड, मोदी मिल फ्लाईओवर, मां आनंदमयी मार्ग, महरौली-बदरपुर।

**जिन मागरे पर यातायात रहेगा परिवर्तित :** नौ अगस्त तक कांवड़ियों की आवाजाही के दौरान वाहनों का दबाव बढ़ने पर प्रमुख मागरे पर वाहनों के मार्क परिवर्तित किए जाएंगे।

मोहननगर से एनएच-24 की तरफ भारी वाहन परिवर्तित होंगे।

वजीराबाद रोड, भोपरा बार्डर और जीटी रोड पर मार्ग परिवर्तित रहेगा। जीटी रोड पर शाहदरा की तरफ वजीराबाद रोड पर नगरीय बसों को छोड़कर भारी वाहनों का परिचालन पूरी तरह से बंद रहेगा।

बाहरी रिंग रोड पर जीटी करनाल रोड पर आने वाले वाहन एनएच-24 की तरफ मोड़े जाएंगे और वजीराबाद रोड व जीटी रोड पर शाहदरा की तरफ आवागमन बंद रहेगा।

**सोनिया विहार, वजीराबाद पुश्ता, बाहरी रिंग रोड पर भी आवागमन रहेगा बंद :** इसके अलावा रानी झांसी रोड, बर्फखाना चौक से दमकल केन्द्र, बुलर्वड रोड, आजाद मार्केट चौक, खजूरी चौक, गोकलपुरी फ्लाईओवर,

66 फुटा रोड, मौजपुर चौक, बाबरपुर टी-प्वाइंट, भजनपुरा चौक, केशव चौक, धर्मपुरा टी-प्वाइंट, मथुरा रोड, एनएच-8 पर धौलाकुआं मेट्रो स्टेशन से रजोकरी बार्डर तक कांवड़ियों की वजह से यातायात जाम की स्थिति बनी रहेगी।

यातायात पुलिस ने वाहन चालकों से इस दौरान इन मागरे से बचकर निकलने की अपील की है।

मौसम अलटः उज़र भारत में परवान पर मानसून

## दिल्ली समेत 12 राज्यों में बारिश के आसार

**नई दिल्ली ( एजेंसी )।** दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड समेत उत्तर भारत में मंगलवार को बारिश जारी रह सकती है। वहीं, मध्यप्रदेश और राजस्थान के कुछ इलाकों में मंगलवार को भारी बारिश होने की संभावना है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब और उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर समेत उत्तर भारत के कई इलाकों में सोमवार को बारिश हुई। स्काइमेट ने भी संभावना जताई है कि अगले 24 घंटों के दौरान, मध्य प्रदेश में मध्यम से भारी बारिश होने की उम्मीद है।

एक दो स्थानों पर भारी बारिश भी हो सकती है पूर्व राजस्थान, गुजरात के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल, सिक्किम, असम, मेघालय, नागालैंड, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा के कुछ हिस्सों, दिल्ली, पश्चिम उत्तर प्रदेश, कोंकण और गोवा, तटीय कनार्टक और केरल में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। स्काइमेट के अनुसार, पिछले 24 घंटों के दौरान, पूर्वी राजस्थान और मध्य प्रदेश के कई हिस्सों में मध्यम से भारी बारिश हुई। विदर्भ, छत्तीसगढ़, झारखंड ओडिशा, पश्चिम बंगाल, जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में बारिश हल्की से माध्यम के बीच थी। एक दो स्थानों पर भारी बारिश भी हुई गुजरात क्षेत्र, कोंकण और गोवा, तटीय कनार्टक, केरल, उत्तर प्रदेश के हिस्सों और बिहार और उत्तराखंड में हल्की से मध्यम बारिश दर्ज की गई। स्काइमेट ने बताया कि उत्तर-पश्चिम झारखंड और आसपास के क्षेत्र में वायु-दबाव का क्षेत्र विकसित हो रहा है।

### एकतरफा प्यार में पागल लड़के ने नाबालिग लड़की को जिंदा जलाया

**बाराबंकी।** बाराबंकी के सफदरगंज थाना क्षेत्र में एकतरफा प्यार के मामले में एक युवक ने नाबालिग लड़की को जिंदा जला दिया। पुलिस ने बताया कि लड़की पड़ोसी के बच्चों को उनके घर छोड़ने गई थी। उसी दौरान आरोपी अमित और उसकी मां ने किशोरी को पकड़ लिया। दोनों ने किशोरी के साथ मारपीट की और उसके शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़क कर उसे जला दिया। किशोरी को जिला अस्पताल ले जाया गया जहां उसकी मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि पीड़िता के पिता केशवराम की तहरीर पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। क्षेत्राधिकारी (सदर) राजेश यादव ने बताया कि किसी बात को लेकर पीड़िता और आरोपी अमित के बीच झगड़ा हो गया था।

*भारतीय सेना में अहीर रेजीमेंट बनाने की मांग को लेकर सोमवार को संसद मार्ग पर प्रदर्शन करते अखिल भारतीय यदुवंशी महासभा के कार्यकर्ता।*

»» सुप्रीम कोर्ट ने विस्तृत योजना मांगी

## इलेक्ट्रिक बसों पर दिल्ली सरकार के हलफनामे से सुप्रीम कोर्ट असंतुष्ट

**नई दिल्ली ( एजेंसी )।** सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली के लिए लो-फ्लोर एक हजार इलेक्ट्रिक बसें खरीदने से संबंधित मामले में दिल्ली सरकार के हलफनामे पर असंतोष व्यक्त किया और उसे छह सप्ताह के भीतर विस्तृत योजना तैयार करने का निर्देश दिया। अदालत ने कहा कि सरकार के हलफनामे में खामियां हैं क्योंकि इन मुद्दों के लिए धन की उपलब्धता, बस डिपो के लिए भूमि, चार्जिंग स्टेशन, इलेक्ट्रिक बसों का स्वरूप और इस परिवहन पणाली के लिए कुशल संरचना आदि के बारे में विस्तृत विवरण की आवश्यकता है। जस्टिस मदन लोकुर और दीपक गुप्ता की बेंच ने दिल्ली सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सालिसीटर जनरल पिंकी आनंद से कहा कि अपने लोगों से कहिए जल्दबाजी नहीं करें क्योंकि जल्दबाजी में आपके पास समस्याएं रहेंगी। इस बारे में ठोस योजना तैयार कीजिए। इसके लिए विशेषज्ञों को साथ लीजिए। पिंकी आनंद ने अदालत से कहा कि वह दिल्ली सरकार से कहेंगी कि अदालत द्वारा उठाए गए सभी बिन्दुओं पर विचार के बाद छह सप्ताह के भीतर विस्तृत योजना तैयार की जाए। अदालत ने पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क से प्राप्त धन का इस्तेमाल इलेक्ट्रिक बसें खरीदने के लिए करने के दिल्ली सरकार के प्रस्ताव पर भी सवाल उठाए। अदालत ने कहा कि सार्वजनिक परिवहन के लिए बसें खरीदने के लिए पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क के रूप में एकत्र धन का उपयोग करने की बजाए बजट में आवंटित राशि का उपयोग होना चाहिए। अदालत ने कहा कि समाचार पत्रों की खबरों के अनुसार दिल्ली की सड़कों में गड्ढे हैं। आप इन गड्ढों की मरम्मत के लिए इस धन का उपयोग नहीं कर सकते क्योंकि यह आपके काम का हिस्सा है। न्याय मित्र की भूमिका निभा रहीं अधिवक्ता अपराजिता सिंह ने अदालत से कहा कि पहले दिल्ली में बसें खरीदने के लिए बजट में आवंटन किया गया था लेकिन दिल्ली परिवहन निगम ने इस मद में आवंटित 150 करोड़ रपए का उपयोग नहीं किया था। उन्होंने कहा कि क्षतिपूर्ति कोष का इस्तेमाल इलेक्ट्रिक बसों को खरीदने के लिए नहीं होना चाहिए क्योंकि यह कोष दूसरे मकसद से बनाया गया है। इस बीच, अतिरिक्त सालिसीटर जनरल ने कहा कि सार्वजनिक परिवहन के लिए 11 हजार बसों की आवश्यकता है लेकिन दिल्ली के पास सिर्फ 5554 बसें ही हैं। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने दो हजार स्टैण्डर्ड बसें खरीदने का निर्णय लिया था जिस पर दिल्ली हाई कोर्ट ने एक याचिका पर सुनवाई के दौरान रोक लगा दी। याचिका में कहा गया था कि सिर्फ लो-फ्लोर बसें ही खरीदी जानी चाहिए। मामले की सुनवाई केअंतिम क्षणों में अदालत ने टिप्पणी की कि सरकार को यह भी देखना होगा कि क्या दिल्ली की सड़कें इन एक हजार इलेक्ट्रिक बसों को हैंडल कर सकेंगी।

**हमारी महानतम विशालता कभी भी न गिरने में नहीं अपितु हर बार गिरने पर फिर उठने में निहित होती है -कंफ्यूशियस**

## शक्तिशाली और नीति-निर्माण

कांग्रेस पार्टी की सबसे शक्तिशाली और नीति-निर्माण करने वाले निकाय कांग्रेस कार्यसमिति ने आगामी लोक सभा चुनाव के मद्देनजर दो बड़े और महत्त्वपूर्ण फैसले किए हैं। दोनों ऐसे फैसले हैं, जिनके नतीजे राहुल गांधी और डूबती कांग्रेस का भविष्य तय करेंगे। पहला, राहुल 2019 के लोक सभा चुनाव में पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे; और दूसरा, कांग्रेस समान विचारधारा वाले दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़ेगी। कार्यसमिति ने अपने सहयोगी दलों के साथ तीन सौ सीटें जीतने का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिनमें से डेढ़ सौ सीटें अपने बूते जीतने का इरादा रखती है। कांग्रेस का चेहरा कौन होगा, यह तय करने का अधिकार किसी भी पार्टी को है, लेकिन कौन किसके साथ मिलकर चुनाव लड़ेगा, यह तय करने का अधिकार किसी एक पार्टी का नहीं हो सकता है। इसीलिए कांग्रेस के लिए यह सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा था, और कार्यसमिति ने सहयोगी दलों को तय करने का अधिकार कांग्रेस अध्यक्ष को दिया है। कार्यसमिति में किसानों की स्थिति, बेरोजगारी और आर्थिक स्थिति पर विचार किया गया। आदिवासी, दलित और पिछड़े तबकों के मुद्दों पर भी चर्चा हुई। कांग्रेस कार्यसमिति का मानना है कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने जिन लोकतांत्रिक संस्थाओं को खंडित किया है, सत्ता में आने पर उनका पुनरुद्धार करेगी। कांग्रेस को याद होगा कि आपातकाल के दौरान लोकतांत्रिक संस्थाओं के साथसबसे ज्यादा खिलवाड़ उसी ने किया था। सच कहा जाए तो कांग्रेस का पुनरुद्धार होना चाहिए। क्या कांग्रेस अध्यक्ष राहुल अपना ध्यान इस ओर आकृष्ट करना चाहेंगे कि उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे बड़े राज्यों में जर्जर हो चुके कांग्रेस संगठन को पुनर्जीवित कैसे किया जाए? कार्यसमिति ने यह घोषित करके विपक्षी एकता को कमजोर कर दिया कि महागठबंधन के नेता राहुल होंगे। कांग्रेस को समझना होगा कि अपने-अपने राज्यों में जो विपक्ष के नेता मजबूती के साथ स्थापित हैं, वे राहुल को अपना नेता क्यों स्वीकार करेंगे या कांग्रेस की सरपरस्ती में चुनाव लड़ेंगे? प. बंगाल में ममता बनर्जी, ओडिशा में नवीन पटनायक, आंध्र में चंद्रबाबू नायडू और उत्तर प्रदेश में मायावती के पास राहुल की तुलना में राजनीतिक अनुभव ज्यादा है। इसलिए राहुल को प्रधानमंत्री बनाने के लिए कांग्रेस को कम से कम दो सौ सीटें जीतनी होंगी। कांग्रेस इस बात को जितनी जल्दी समझ ले, उतना ही उसके लिए बेहतर है।

## केन्द्र से नया कानून

हत्या और हिंसा देश के हर विवेकशील व्यक्ति के लिए चिंता का कारण है। इसे रोकने के लिए जो कुछ भी करने की आवश्यकता है, वह केन्द्र एवं राज्य सरकार को करना ही चाहिए। चूंकि कानून और व्यवस्था राज्यों का विषय है; इसलिए इसको रोकने तथा हिंसा व हत्या के अपराधियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जिम्मेवारी उन्हीं की है। बावजूद केन्द्र एकदम मूकदर्शक नहीं रह सकता। केन्द्र सरकार की ओर से यह खबर आ रही है कि इसके लिए भारतीय दंड संहिता में अलग से प्रावधान बनाए जाएंगे। वास्तव में हर कुछ अंतराल पर हो रही भीड़ की हिंसा के बाद इसके लिए अलग से नए कानून की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने आदेश में केन्द्र से नया कानून बनाने को कहा था। तो देखते हैं केन्द्र की ओर से कैसे कानून का प्रारूप आता है। अगर भीड़ की हिंसा के लिए विशेष कानून हो जाए तो पुलिस प्रशासन के लिए भी उसके तहत मुकदमा एवं कानूनी कार्रवाई करना आसान हो जाएगा। पुलिस को अभी अन्य अपराध की धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज करना पड़ता है। इस कारण एक ही तरह के अपराध के लिए अलग-अलग राज्य ही नहीं अलग-अलग जिलों में भी एक समान धाराएं नहीं लगाई जातीं। नए कानून के बाद कानूनी कार्रवाई में एकरूपता आ जाएगी। इसके पहले गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने यह भी जानकारी दी कि केन्द्र की ओर से राज्यों को दो-दो बार एडवायजरी भी जारी की जा चुकी है। सर्वोच्च न्यायालय ने इसका भी निर्देश दिया था। किंतु कोई यह समझे कि नए कानून बना देने से भीड़ की हिंसा रु क जाएगी या इसमें कमी आ जाएगी तो यह सही नहीं होगा। इससे कार्रवाई के लिए केवल एक कानूनी छाता एजेंसियों को उपलब्ध होगा। कानून में अभी भी ऐसे प्रावधान हैं, जिनमें बर्बर हिंसा, हत्या, हत्या के प्रयास या किसी तरह दुर्भावना से ग्रस्त होकर शारीरिक क्षति पहुंचाने आदि के लिए कठोर सजा निर्धारित हैं। हर जगह दोषी पकड़े गए हैं और कुछ को सजा भी हो चुकी है। बावजूद इसके यदि ऐसा हो रहा है तो इसके कारणों में गहराई से जाने की आवश्यकता है। केन्द्र चाहे तो राज्यों की इस पर अलग से बैठक बुलाकर कारणों की गहरी समीक्षा करें और उसे दूर करने के लिए समग्र कदम उठाए जाएं।

# विपक्ष एकजुट

**सबसे पहले कांग्रेस पार्टी ने इसका समर्थन किया जो अपने कार्यकाल में बिहार जैसे राज्य को विशेष दरजा देने से इनकार कर चुकी थी। आंध्र प्रदेश का विभाजन भी उसी ने किया था लेकिन पुनर्गठन कानून में विशेष राज्य का कोई प्रावधान नहीं डाला। बावजूद उसका सबसे उत्साहित होकर अविास प्रस्ताव का समर्थन करना साबित कर रहा था कि उसकी निगाहें कहीं और हैं। तो अविास प्रस्ताव का विश्लेषण इसी आधार पर करना होगा कि आखिर लोक सभा में दूसरी सबसे बड़ी पार्टी की निगाहें कहां थी? या यह अवसर उसके लिए क्या साबित करने का था? इस अविास प्रस्ताव के द्वारा कांग्रेस के सामने तीन प्रमुख लक्ष्य थे। एक, यह दिखाना कि नरेन्द्र मोदी सरकार और भाजपा के खिलाफ विपक्ष एकजुट है।**

सतीश पेडणोकर

जुलाई को देश में पेट्रोल-डीजल के वायदा कारोबार के लिए पेट्रोल पंप मालिकों तथा पेट्रोल-डीजल के उपभोक्ताओं को जागरूक करने के लिए इंडियन कमोडिटी एक्सचेंज (आईसीईएक्स) द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस जागरूकता कार्यक्रम में यह बताया जा रहा है कि पेट्रोल-डीजल की कीमतों में हर दिन होने वाले बदलाव से निपटने के लिए वायदा एक बेहतर विकल्प है। केंद्रीय पेट्रोलियम मंत्रालय पहले ही आईसीईएक्स को डीजल-पेट्रोल में वायदा कारोबार शुरू करने की सैद्धांतिक मंजूरी दे चुका है। अब शीघ्र ही भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) की मंजूरी के बाद अगस्त, 2018 से पेट्रोल और डीजल के वायदा कारोबार की संभावनाएं बताई जा रही हैं। इससे देश को करोड़ों लोग पेट्रोल-डीजल की कीमतों में हर दिन होने वाली घट-बढ़ की परेशानियों से बच सकेंगे। यह निर्धारित किया गया है कि पेट्रोल और डीजल वायदा की कीमत भारतीय रुपये में होगी और बेंचमार्क कीमत भी भारतीय कीमतों में होगी। आम आदमी की भाषा में वायदा कारोबार का मतलब ऐसे वित्तीय अनुबंध से है, जिनके तहत अग्रिम तिथि और पूर्व निर्धारित मूल्य पर क्रेता जिंस का सौदा कर सकते हैं, और विक्रेता अपना सामान बेच सकते हैं। उदाहरण के लिए आप आज की दर पर किसी निश्चित मात्रा में पेट्रोल या डीजल के लिए सौदा कर सकते हैं, जिसकी डिलीवरी एक माह बाद होने वाली है।

यह सौदा मामूली मार्जिन मनी रख कर किया जा सकता है, और डिलीवरी के समय इसका भुगतान किया जा सकता है। निश्चित रूप से पेट्रोल-डीजल के वायदा कारोबार से दिन-प्रतिदिन हो रही पेट्रोल-डीजल की घट-बढ़ और उसकी हानियों से बचा जा सकेगा। लेकिन सरकार के द्वारा बढ़ती हुई पेट्रोल-डीजल की कीमतों से उपभोक्ताओं को राहत दिलाने के लिए रणनीतिक रूप से कदम उठाने होंगे। भारत द्वारा अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कच्चे तेल की कीमतों में मौजूदा बढ़े हुए स्तर से होने वाली मुश्किलों के मद्देनजर एक ओर तेल कीमतों पर उपयुक्त नियंतग्र तथा दूसरी ओर तेल के अन्य विकल्पों की रणनीति पर आगे बढ़ना होगा।

सस्ते कच्चे तेल के मोल-भाव के लिए भारत ने पिछले माह जून, 2018 में एक प्रभावी कदम आगे बढ़ाया है। दुनिया के तीन में से दो सबसे बड़े तेल उपभोक्ता देश चीन और भारत ने हाथ मिलाकर तेल उत्पादक देशों पर कच्चे तेल की कीमत वाजिब किए जाने का दबाव बनाने हेतु संयुक्त रणनीति को अंतिम रूप दिया है। उल्लेखनीय है कि चीन और भारत ने इस संयुक्त रणनीति के तहत सबसे पहले ओपेक संगठन में कच्चे तेल का उत्पादन बढ़ाने का जो दबाव बनाया वह सफ ल और सार्थक रहा। यदि चीन-भारत अपने गठजोड़ का विस्तार करते हुए इसमें दो और बड़े तेल उपभोक्ता दक्षिण कोरिया और जापान को भी भागीदार बना लें तो दुनिया के ये चार बड़े तेल उपभोक्ता देश संगठित रूप से तेल उत्पादक देशों से अधिक मोल-भाव कर सकेंगे। हम आशा करें कि देश को पेट्रोल और डीजल की महंगाई से बचाने के लिए सरकार अपना ध्यान ऊर्जा नीति को नये से तैयार करने पर केंद्रित करेगी ताकि मौजूदा हालात के लिहाज से बेहतरीन ऊर्जा नीति तैयार की जा सके और पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों से होने वाली आर्थिक मुश्किलों को कम किया जा सके। चूंकि देश तेजी से विकास कर रहा है, और 2030 तक आने वाले वर्षो के दौरान देश की ऊर्जा संबंधी मांग बहुत तेजी से बढ़ेगी। इस अवधि में यह मांग दुनिया के किसी भी अन्य देश की तुलना में तेज होगी। कच्चे तेल के आयात पर इसकी निर्भरता में भी इजाफा होगा। ऐसे में आवश्यकता इस बात की होगी कि सरकार एक एकीकृत ऊर्जा नीति तैयार करे। सरकार द्वारा बिजली से चलने वाले वाहनों पर काफी जोर देना होगा। इलेक्ट्रिक कारों को टैक्स कम करके बढ़ावा देना होगा। केंद्र सरकार के द्वारा जून, 2018 में नीति आयोग के द्वारा दिए गए उस महत्त्वपूर्ण सुझाव पर गौर किया जाना होगा जिसमें कहा गया है कि राज्य परिवहन निगमों को लक्ष्य दिया जाना होगा कि वे अपने परिवहन बेड़े में एक निश्चित प्रतिशत में इलेक्ट्रिक वाहन शामिल करें। सरकार के द्वारा इलेक्ट्रिक कार और गैस से संचालित होने वाले वाहनों को प्रोत्साहन देना होगा।

इसके साथ-साथ केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा सार्वजनिक परिवहन सुविधा को सरल और कारगर बनाया जाना होगा। यह भी उपयुक्त होगा कि तेल की कीमतों में राहत देने के लिए पेट्रोल और डीजल को जीएसटी के तहत 28 फीसदी की श्रेणी के दायरे में लाया जाए। इसके साथ-साथ राज्य सरकारों को भी एक न्यूनतम दर पर वैट लगाने की अनुमति दी जाए ताकि राज्य सरकारों की आमदनी में एकदम कमी न आए और लोगों को भी कम दर पर पेट्रोल और डीजल प्राप्त हो सके। सरकार द्वारा तेल बाजार में समय और मूल्य आधारित नीतिगत हस्तक्षेप के मद्देनजर तेल कीमतों को एक मानक स्तर से नीचे रखकर अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एवं सेवाओं की खपत को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हम आशा करें कि भारत तेल कीमतों पर नियंतग्रऔर सस्ते कच्चे तेल के मोल-भाव के लिए चीन के साथ-साथ दक्षिण कोरिया और जापान का गठजोड़ बनाने की डगर पर आगे बढ़ेगा और यह गठजोड़ कच्चे तेल की कुछ कीमत घटाने में कामयाब होगा। आशा करें कि 4 नवम्बर के बाद ईरान से कच्चे तेल की आपूत्तर बंद होने के बाद भारत कच्चे तेल की उपयुक्त कीमत पर आपूत्तर करने वाले नये मित्र देश खोजने में अवश्य सफल होगा। साथ ही, पेट्रोल और डीजल के उपयोग में कमी लाने के लिए सार्वजनिक परिवहन और इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग की दिशा में भी तेजी से आगे बढ़ेगा। आशा करें कि पेट्रोल और डीजल के वायदा कारोबार के लिए इंडियन कमोडिटी एक्सचेंज द्वारा जो नीति बनाई गई है, उसके तहत भारत में अगस्त, 2018 से इनका वायदा कारोबार आकार ग्रहण करेगा तथा जिससे आम लोगों को पेट्रोल-डीजल की दिन-प्रतिदिन की घट-बढ़ की मुश्किल से राहत मिल सकेगी। इन सभी रणनीतिक प्रयासों से अर्थव्यवस्था कच्चे तेल की बढ़ती कीमतों के खतरों का सामना कर सकेगी। आम आदमी को राहत मिलेगी। अर्थव्यवस्था विकास की डगर पर आगे बढ़ती रहेगी।

## चलते चलते

# सरकारी दफ्तरों और प्राइवेट सिनेमा

सरकारी दफ्तरों और प्राइवेट सिनेमा हालों का हाल देखकर साफ होता है कि यह नारा एकैदम सटीक है-खाना जरूरी है। खाने के बगैर कमाई में समृद्धि नहीं आती। महाराष्ट्र सरकार ने फरमान जारी किया कि वहां के सिनेमा हॉलों में अब दर्शक खाने के अपने आइटम लेकर आ सकेंगे। अभी तो हाल यह है कि तुषार कपूर की फिल्म, दो हजार रुपये किलो पॉपकॉर्न और दो सौ रुपये की काफी एक साथ झेलनी पड़ जाती है। अनुमान है कि सिनेमा हॉलों की कमाई में पच्चीस प्रतिशत से ज्यादा की कमी आ जाएगी। एक सिनेमा हॉल मालिक ने जो बताया, उसका आशय यह था कि कभी-कभी तो शाहरु ख खान तक सिनेमा हॉल में फेल हो जाते हैं, पर दो हजार रु पये का पॉपकॉर्न कभी फेल ना होता, मुनाफा कराने में। तो

**महाराष्ट्र सरकार ने फरमान जारी किया कि वहां के सिनेमा हॉलों में अब दर्शक खाने के अपने आइटम लेकर आ सकेंगे। अभी तो हाल यह है कि तुषार कपूर की फिल्म, दो हजार रुपये किलो पॉपकॉर्न और दो सौ रुपये की काफी एक साथ झेलनी पड़ जाती है।**

जी अगर पॉपकॉर्न से ही कमाना है, तो काहे सिनेमा हॉल के धंधे में हो, पॉपकॉर्न काफी का कारोबार करो-मैंने यह बात एक सिनेमा हॉल वाले से कही। उसने जवाब दिया-ऐसी बात आप प्राइवेट स्कूल के मालिकों से भी कह दीजिए। अगर महंगी किताबें, सुपर महंगी ड्रेस और परम महंगे टूर प्लान बेचकर कमाना है, तो स्कूल का धंधा छोड़कर किताबें, ड्रेस और ट्रेवल एजेंट की दुकान खोल लो। देश में स्कूल ड्रेस बेचकर कमा रहे हैं। सिनेमा हॉल पॉपकॉर्न बेचकर कमा रहे हैं। डॉक्टर गैर-जरूरी मेडिकल टेस्टों के प्रिस्क्रिप्शन बेचकर कमा रहे हैं। जिसको जहां से कमाना चाहिए, वहां के अलावा और तमाम जगहों से कमाने की जुगाड़ में लगे हैं। दिल्ली का एक फाइव स्टार अस्पताल अपनी कैंटीन से करोड़ों कमाता है। यह किडनैपिंग की कमाई जैसी कमाई है। सिनेमा हॉल वाले दर्शकों को बंधक जैसा बना लेते हैं। हॉल के अंदर-बाहर के खाने-पीने के आइटम नहीं आएंगे। जिसे पानी पीना होगा, वह पचास रु पये की एक बोतल खरीदेगा। कमाई खाने-पीने की चीजों से नहीं है, कमाई बंधक बनाने से है। प्राइवेट स्कूल वाले पैरेंट्स को बोल देते हैं-इस दुकान से ड्रेस, उस दुकान से किताब और उस दुकान से बच्चे के टूर खरीदे जाएंगे। स्कूल, सिनेमा हॉल और सरकारी दफ्तरों के बाहर लिखवा दीजिए-फिरौती तो देनी पड़ेगी। कम से कम सिनेमा हॉल और सरकारी दफ्तरों के बाहर यह तो लिखवा ही दिया जाए-खाना जरूरी है।

## फोटोग्राफी...

**एंटरटेनमेंट फॉर किड्स इन बर्लिन...** *जर्मनी की राजधानी बर्लिन के एक बोटेनिकल गार्डन में ट्रांसपेरेंट बॉल्स में परफॉर्म करते डांसर्स। यहां हर वीकेंड पर बच्चों के लिए एंटरटेनमेंट इवेंट्स होते हैं जिनमें परफॉर्मर्स बड़े-बड़े बॉल्स में बंद होकर डांस परफॉर्मेंस देते हैं।*

## पर्यावरणीय घटनाएं

पिछले कुछ समय की पर्यावरणीय घटनाएं साफ बता रही हैं कि बड़ी चेतावनी आ चुकी है। इस बार पहले हमें बढ़ी गर्मी ने मारा, फिर तूफानों की चपेट में दम निकला और अब बादल फ टना और बाढ़ के प्रकोप में फंस हैं। विश्व स्वास्य संगठन की रपट-2016 खुलासा कर चुकी है कि हवा बदल रही है। हर पल ली जाने वाली सांस ही हमें बड़ी मुश्किल में डालने वाली है। विश्व स्वास्य संगठन ने 108 देशों के 4300 शहरों के अध्ययन में पाया कि शहर ही बिगड़ती हवा के पहले निशाने हैं क्योंकि अनियोजित शहरीकरण और उद्योगीकरण ही प्रकृति के खिलाफ मनुष्य का पहला और बड़ा कदम रहा है। मतलब जीवन को सारी सुविधाओं से लैस करना ही दुनिया का लक्ष्य बन गया। यह सिलसिला ऐसा बना कि कोई भी देश हो या शहर या गांव, इससे वंचित नहीं रहना चाहता। विज्ञान की खोजें और उद्योग इस तरफ एक साथ हो गए और एक दूसरे के पूरक भी बने। इतना ही नहीं इसी दौर में वर्चस्व बनाए रखने के लिए अस्त्र शस्त्रों का भी निर्माण हुआ तो न्यूक्लियर शक्तियों का प्रदर्शन भी। फिर कुछ देशों का बड़ा व्यापार भी बना देखते ही देखते दुनिया का व्यवहार और प्रवृत्ति एक उस मशीन की तरह बन गई जिसमें न संवेदनाएं होती हैं, और न ही कोई नियंत्रण। इस प्रवृत्ति ने प्रकृति को भी इसी सांचे में ढालने की कोशिश शुरू की और उसको अपने सापेक्ष ढालने की। मनुष्य ने मान लिया कि प्रकृति मूक है, कुछ नहीं बोलेगी। अब जब विनाशी विकास के कदम ठहरने का नाम नहीं ले रहे थे, तो प्रकृति ने मनुष्य के लिए हवा को बदलने का फैसला कर लिया। दुनिया का कोई ऐसा कोना और आदमी नहीं बचा जिस पर वायु प्रदूषण ने अपनी पैठ ना बना ली हो। विश्व स्वास्य संगठन के अनुसार 90 फीसदी लोग वायु प्रदूषण के घेरे में हैं। लगभग 70 लाख लोग प्रति वर्ष दुनिया में इसके कारण जीवन खो देते हैं। अपने देश के तो कहने क्या! दुनिया के शीर्ष 20 वायु प्रदूषित शहरों में 14 अपने ही देश के हैं। इनमें भी वाराणसी, कानपुर, आगरा अकेले उत्तर प्रदेश में हैं।

प्रदूषित हवा ही नहीं बल्कि हवाई तूफानों के बवंडर बड़ी-बड़ी घटनाओं के कारण बन रहे हैं। बार-बार अप्रत्याशित इन तूफ ानों के कारणों को भी जान-समझ लेने का समय है। अचानक बवंडरों की बाढ़ प्रकृति की उस पीड़ा का ही हिस्सा है, जिसे वह सहन नहीं कर पा रही। अति तापमान की वृद्धि का कारण हमारी नासमझी का है। देश-दुनिया का कोई कोना नहीं बचा है, जहां सुविधाओं के लिए होड़ न हो। मिडिल ईस्ट और साउथ यूरोप में लूसीफर बवंडर जलवायु परिवर्तन के कारण आई बड़ी लू की ही देन थी। हवा ही नहीं, जीवन का एक और बड़ा अमूल्य साधन पानी भी संकटग्रस्त है। केपटाउन की कहानी वहीं तक सीमित नहीं रहने वाली। दुनिया में दूसरी बड़ी घटना की शुरुआत का संदेश है। अपने ही देश में 21 शहर-गुरुग्राम, कानपुर, शिमला, जमशेदपुर, आसनसोल, अमरावती, कोच्चि, सोलापुर, मुंबई, धनबाद, विशाखापट्टनम, फरीदाबाद, दिल्ली, बेंगलुरू, मेरठ जीरो डे पर पहुंचने वाले हैं। शिमला पानी के संकट में है और यह भी विडंबना ही है वहीं दूसरी तरफ यहां के ही मुख्यमंत्री शिमला में पानी के संकट के लिए दिल्ली में गुहार लगाते रहे।

एक और पहलू देखिए। जीवन बेहतर करने के लिए हमने तमाम तामझाम इकट्ठे किए वे ही दूसरे रूप में जीवन को नष्ट करने पर उतारू हों तो इसे विनाशी विकास ही तो कहेंगे। अब विकास को प्रकृति को जोड़कर देखने की कोशिशों की शुरुआत करने का समय है।

## सत्संग

### इच्छा

स्वतंत्रता मनुष्य की परम इच्छा है। स्वतंत्रता में ही मनुष्य अपनी खिलावट में आता है। ध्यान स्वतंत्रता लाएगा, और मैं प्रेम के विरोध में नहीं हूं; यह बस स्वतंत्रता से एक कदम नीचे है, और तुम्हारे आस-पास एक खुशबू की तरह प्रेम की उपस्थिति होना बहुत सुन्दर होता है। स्वतंत्रता को तुम्हारा केंद्र और प्रेम को तुम्हारी परिधि बन जाने दो, और तुम एक सम्पूर्ण आस्तित्व हो जाओगे। परन्तु संबंध कभी काम नहीं करते। तुम मुझसे पूछ रहे हो: ''दो व्यक्ति कैसे एक दूसरे के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं?' वे नहीं हो सकते। प्रतिबद्धता आस्तित्व के प्रति होती है, न कि एक दूसरे के लिए। प्रतिबद्धता केवल पूर्ण के प्रति हो सकती है न कि एक दूसरे के लिए।''एक संबंद्ध कैसे काम करता है?' तुम पूछते हो। यह काम नहीं करता-और तुम यह सब तरफदेख सकते हो। यह केवल इसका ढोंग करता है। लोग कहते फिरते हैं, सब-कुछ ठीक है, सब-कुछ अच्छा है। अपना दु:ख दिखाने में क्या सार है? अपने घाव दिखाने में क्या सार है? व्यक्ति उनको छिपाए जाता है। अपने दु:ख दिखाना अपमानजनक लगता है, तो लोग दिखावा करते हैं कि सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा है। वे मुस्कुराते रहते हैं, वे अपने आंसुओं को दबाते जाते हैं। ऐसा बोला जाता है कि फ्रेडरिक नीत्शे ने कहा है, ''मैं केवल इस कारण हंसता-मुस्कुराता रहता हूं कि यदि मैं ना मुस्कुराऊं तो संभवत: मैं रोना शुरू कर दूंगा।''हंसना अपने आंसुओं को छिपाने का तरीका है: तुम अपनी ऊर्जा को आंसुओं से मुस्कराहट में बदल देते हो ताकि तुम अपने आंसुओं को भुला सको। परंतु सभी आंसूओं से भरे हैं। मैंने अनेक लोगों के जीवन में झांक कर देखा है, उनके संबंधों में। वे सब दु:ख हैं, परन्तु वे उसे छिपा रहे हैं, सब-कुछ ठीक होने का नाटक करते हुए। एक संबंध कार्यात्मक नहीं होता, हो नहीं सकता। और तुम कहते हो: ''मैं प्रतिबद्धता से डरता हूं, इसलिए मैं संबंधों को टालता रहता हूं।' तुम्हरा प्रतिबद्धता से डरना बिल्कुल सही है, और संबंधों से बचने की कोशिश में भी तुम बिल्कुल सही हो परंतु संबंधित होने से मत बचो। कोई विशिष्ट संबंध ना बनाएं, मैत्रीपूर्ण बने। प्रेम को मैत्री की ऊंचाई तक उठने दो। इसे अपना गुण बन जाने दो। प्रेमपूर्वक बनो। इसे संबंध न बनाओ, बस प्रेमपूर्वक हो जाओ। यह तीन तल हैं। संबंध इन सब से नीचा तल है, वह पाशविक है। प्रेम तुम्हारे होने का गुण है। जैसे तुम सांस लेते हो प्रेम को भी वैसे ही होने दो, वह मानवीय है।

संक्षिप्त

## एसडीएम ने संभाला कार्यभार

**सकलडीहा(चंदौली),** नवागत एसडीएम राम सजीवन मौर्य ने सोमवार को सकलडीहा एसडीएम का पदभार ग्रहण किया। उन्होंने तहसील के समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ बैठक कर आवशयक दिशा-निर्देश दिये। अम्बेडकर नगर निवासी रामजीवन मौर्य 2015 बैच के पीसीएस अधिकारी हैं। इसके पूर्व वह चकिया और नौगढ़ में एसडीएम पद पर कार्य कर चुके हैं।

## महिला की हत्या में दर्जनभर आरोपित गिरफ्तार

**सिंगरौली (सोनभद्र),** बच्चा चोरी के शक में विक्षिप्त महिला की हत्या के मामले में पुलिस ने ४८ घंटों के भीतर ही घटना में शामिल दर्जनभर ग्रामीणों को गिरफ्तार कर लिया। वहीं घटना में शामिल दो आरोपी अभी भी पुलिस की गिरफ्त से बाहर हैं, जिन्हें पकड़ने के लिए पुलिस द्वारा प्रयास किया जा रहा है। पुलिस ने भोस और कतरिहार के देवलाल लसह, गोपाल सिंह, दुर्गा सिंह, दीप नारायण सिंह, रघुवीर सिंह, राय सिंह, रामाशंकर साहू, गंभीर सिंह, राम चरण सिंह, लखपति सिंह, करण सिंह, जगशाह अगरिया को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं इस हत्या में शामिल रामबली सिंह और हीरा सिंह अभी पुलिस की गिरफ्त से बाहर हैं। जिनकी धरपकड़ के लिए जगह-जगह दबिश दी जा रही है। वहीं मोरवा थाना क्षेत्र में अब ग्रामीणों को एलाउंस करवाकर अफवाहों से बचने के लिए सूचित किया जा रहा है।

## वरुण गांधी ने कहा चीनी मिल की दशा सुधारे सरकार

**सुलतानपुर,** जिले की इकलौती चीनी मिल की दशा पर सांसद वरुण गांधी ने चिंता जताई है। उन्होंने जर्जर हो रही चीनी मिल की दशा सुधारने और उसे घाटे से उबारने के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखा है। पत्र में सांसद ने ग्यारह माह से कर्मचारियों के बकाए वेतन को भी दिए जाने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि गन्ना किसानों के लिए यह महत्वपूर्ण चीनी मिल है। उनका हित देखते हुए इसकी पेराई क्षमता में वृद्धि की जाए। पुराने पड़े संयंत्रों को बदला जाए। पूरी तौर पर मिल का जीर्णोद्धार कराया जाए। समय से कदम नहीं उठाया गया तो निरंतर घाटे में जा रही चीनी मिल आगामी पेराई सत्र में ठप हो सकती है। सांसद के इस पहल का पूर्व जिलाध्यक्ष करुणाशंकर द्विवेदी, डा.सीताशरण त्रिपाठी, संदीप मिश्र, संतबख्श सिंह, पूर्व विधायक अर्जुन सिंह, विजय सिंह रघुवंशी, सभाजीत पांडेय, राघवेंद्र श्रीवास्तव, संदीप पांडेय आदि ने स्वागत किया है।

## दियरा-पीढ़ी सड़क की हुई मरम्मत

**मोतिगरपुर (सुलतानपुर),** प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बनी दियरा-पीढ़ी सड़क पहली ही बारिश में दियरा बाजार के पास कट कर बह गई थी। आने -जाने वाले राहगीरों के लिए खतरा बना हुआ था। जबकि कई भारी भरकम वाहन भी इस मार्ग से होकर रोजाना गुजरते हैं। यदि जरा सी भी चूक होती तो कई फिट नीचे जाने का खतरा भी था। सोमवार को इस सड़क की मरम्मत कर दी गई।

## शिक्षक से १० हजार रुपये लेकर उचक्के फरार

**अंबेडकरनगर,** जहांगीरगंज थाना क्षेत्र के इसौरी नसीरपुर निवासी त्रिभुवन नारायन पुत्र स्व. घूरेराम हंसवर थाना क्षेत्र के एकडंगी दाऊदपुर के प्राथमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक पद पर कार्यरत हैं। सोमवार को दोपहर बाद विद्यालय से शिक्षण कार्य निपटाकर बैंक ऑफ बड़ौदा के हंसवर शाखा में संचालित अपने खाते से 10 हजार रुपये निकालकर कटोखर चौराहे पर मोटर साइकिल में बैग टांगकर सामान खरीदने लगे। पीछे से पहुंचे मोटर साइकिल सवार तीन उचक्कों ने बैग लेकर बसखारी की तरफ फरार हो गए। सूचना के बाद हरकत में आई पुलिस ने घेराबंदी की, लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी। प्रभारी निरीक्षक रामअवतार ने बताया कि अज्ञात के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत कर आरोपियों के पहचान तथा पकड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं।

## तालाब में डूबने से किशोर की मौत

**बस्ती,** गौर थाना क्षेत्र के तिंछबाबू गांव के एक किशोर की सिद्धार्थ नगर जिले के मोहाना थाना अंतर्गत मुरादीपुर गांव में तालाब में डूबने से मौत हो गई। एक तरफ जहां परिजन सदमे में आ गई वहीं गांव में मातम छा गया। परिजनों द्वारा शव के पोस्टमार्टम की तहरीर देने पर गौर पुलिस ने सोमवार को शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बस्ती भेज दिया। तिंछ बाबू गांव निवासी पारसनाथ गौड़ गौर पुलिस को दी तहरीर में बताया कि उसका 17 वर्षीय भाई सन्नी गौड़ सिद्धार्थ नगर जिले के मोहाना थाना क्षेत्र अंतर्गत मुरादीपुर स्थित संजय राउत के फर्म में काम करता था। रविवार को वही तालाब में नहाते समय उसकी डूब कर मौत हो गयी।

## दीवार गिरी, मलबे में ५ दबे

**चंदौली,** बारिश शुरू होते ही दीवारों के गिरने का सिलसिला जारी हो गया है। सोमवार की सुबह सैयदराजा थाना क्षेत्र के तेंदुहान गांव में दीवार गिर गई। हादसे में पांच लोग दीवार के मलबे में दबकर घायल हो गए। इसमें रामउग्रह (43), पौधारी (40), खुशी (1), खुशबू (छह माह) किशन (18) शामिल हैं। ग्रामीणों ने मलबे में दबे सभी को बाहर निकाल कर निजी अस्पताल पहुंचाया। सभी घायलों का इलाज चल रहा है। दूसरी ओर चहनियां के मटीयरा गांव में रविवार की रात को मालती देवी का मकान का आगे का हिस्सा गिर गया। उसमें रखा अनाज, चारपाई, कपड़े आदि सब सामान नष्ट हो गया। ग्रामीणों ने उच्चाधिकारियों से सहायता दिलाने की मांग की है।

## कलेक्ट्रेट में रजपुरा के ग्रामीणों ने किया प्रदर्शन

**ज्ञानपुर (भदोही),** शौचालय, आवास व राशन वितरण की समस्या को लेकर सोमवार को कलेक्ट्रेट पहुंची भदोही के रजपुरा के ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया। जिलाधिकारी को पत्रक सौंपकर जांच कराकर कार्रवाई की मांग की। दोपहर में कलक्ट्रेट पहुंची दर्जनों की संख्या में पहुंची गांव की महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन किया। कहा कि तमाम पात्र परिवारों को जहां शौचालय का निर्माण नहीं कराया गया तो आवास भी नहीं मिल सका है। इसके साथ ही कोटे की दुकान से राशन का भी नियमित ढंग से वितरण नहीं किया जा रहा है।

# कागजों पर नहीं, जमीन पर बन रही हैं सड़कें-केशव प्रसाद

**चुनार (मिर्जापुर),** उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि सपा व बसपा के शासन काल में सड़कें सिर्फ कागजों पर बनती थीं, लेकिन आज सड़कें जमीन पर बनाई जा रही हैं। हमारी सरकार का उद्देश्य गुणवत्ता पूर्ण विकास कार्य को समय सीमा में पूरा करना है। प्रदेश में 25 राष्ट्रीय मार्गों को स्वीकृत किया जा चुका है, जिनका निर्माण कार्य शीघ्र शुरू कराया जाएगा। आज प्रदेश में सड़कों का संजाल पहले की तुलना में सुदृढ़ हुआ है। अब 250 आबादी वाले गांवों को भी पक्के मार्गों से जोड़ा जाएगा। साथ ही बारिश के मद्देनजर प्रदेश की 2.40 लाख किमी सड़कें 25 जुलाई से पहले गड्ढामुक्त हो जाएंगी। वे सोमवार को सक्तेशगढ़ में स्वामी अड़गड़ानंद महराज का दर्शन करने पहुंचे थे। सक्तेशगढ़ स्थित परमहंस आश्रम में प्रेस प्रतिनिधियों से बातचीत में उन्होंने कहा कि 2001 की जनगणना के अनुसार प्रदेश के जिन गांवों की जनसंख्या ढाई सौ थी, उन गांवों को संपर्क मार्ग के जरिए प्रदेश के मुख्य मार्गों से जोड़ा जा रहा है। वर्तमान में प्रदेश के स्टेट हाईवे, नेशनल हाईवे, एक्सप्रेस हाईवे से जोड़ने के लिए उनसे जुड़े हुए पांच किलोमीटर के अंदर गांवों को आवश्यक धनराशि निर्गत कर दी गई है। बताया कि आज प्रदेश की सड़कें नई तकनीक से बनाए जाने से एक ओर जहां लागत में कमी आई है वहीं दूसरी ओर गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है और निर्माण में भी तेजी आई है। प्रदेश की अंतरराज्यीय सीमा से लगे 54 क्षेत्रों में सड़क निर्माण कार्य शुरू करा दिए गए हैं और इसी वित्तीय वर्ष में उन्हें पूरा कर लिया जाएगा। आश्रम में आने के प्रयोजन के सवाल पर कहा कि यह आस्था की धरती है। यहां पहले से आता रहा हूं। प्रदेश की सड़कों पर टोल टैक्स के सवाल पर डिप्टी सीएम ने कहा कि पहले से जिन मार्गों पर टोल टैक्स लिया जा रहा है वहां ऐसा कोई प्रस्ताव नहीं है,लेकिन प्रदेश में बनने वाली नई सड़कों पर सवारी कारों से टोल टैक्स न वसूले जाने का प्रस्ताव लाया जाएगा। शरीयत कानून व अदालत के प्रश्न पर कहा कि देश में भारत का संविधान है और संविधान का सम्मान सबको करना होगा। उससे इतर जाकर कुछ भी संभव नहीं है। देश में सभी नागरिक समान हैं।



## भूमि विवाद में चला फावड़ा, बाप-बेटी लहूलुहान

**खुखुंदू( देवरिया),** थाना क्षेत्र के ग्राम हरखपुरा में भूमि को लेकर दो पक्षों में विवाद हो गया। इस बीच एक पक्ष ने फावड़ा चला दिया, जिससे बाप-बेटी गंभीर रूप से घायल हो गए। लहूलुहान स्थिति में दोनों को इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया गया। इस मामले में पीड़ित पक्ष ने पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। हालांकि देर शाम तक इस मामले में मुकदमे की कार्रवाई नहीं हो सकी थी। गांव के रामपति व रामबदन के बीच विवाद चल रहा है। रामपति 52 पुत्र बुद्धू अपनी भूमि पर कुछ कार्य कर रहा था, इसी बीच रामबदन के परिवार के लोग आपत्ति करने लगे और कहासुनी के दौरान विवाद बढ़ गया। देखते ही देखते दोनों पक्षों से हाथापाई होने लगी। रामपति का आरोप है कि हाथापाई के दौरान दूसरे पक्ष ने उस पर फावड़ा से प्रहार कर दिया। यह देख उसे बचाने के लिए उसकी बेटी दौड़ी तो आरोपितों ने उसपर भी फावड़ा से प्रहार कर दिया। लोगों ने बीच-बचाव कर मामले को शांत कराया और घायल बाप-बेटी को इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया। इस बाबत थानाध्यक्ष भूपेंद्र सिंह ने कहा कि तहरीर मिली है। मामले की जांच की जा रही है। जांच के बाद आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

# प्रधानमंत्री आवास में भ्रष्टाचार का मामला पहुंचा डीएम दरबार

**वाराणसी,** प्रधानमंत्री आवास योजना भ्रष्टाचार के दलदल में फंस गई है। सर्वे के नाम पर सर्वेयरों द्वारा लाभार्थियों से पांच सौ से लेकर एक हजार रुपए तक वसूली का मामला सामने आया है। डीएम दरबार तक मामला पहुंचने के बाद डूडा कार्यालय में हड़कंप मचा है। सर्वे के नाम पर वसूली करने वाले सर्वेयरों को कार्यमुक्त करने के साथ ही उनके खिलाफ मुकदमा लिखवाने की तैयारी चल रही है। औसानगंज निवासी संतोष कुमार गुप्ता सोमवार को दोपहर में विकास भवन स्थित नगरीय विकास अभिकरण कार्यालय (डूडा) पहुंचा। पान की दुकान के संचालक संतोष ने परियोजना अधिकारी केएस परिहार को बताया कि सर्वे के लिए कार्यदायी एजेंसी के शशांक शनिवार को उसके घर आए और एक हजार रुपए देने पर ही दूसरी किश्त के लिए जियो टैगिंग की बात कही। संतोष ने पांच सौ रुपए ही उपलब्ध होने की गुहार लगाते हुए शशांक से टैगिंग के लिए कहा लेकिन वह चला गया। संतोष के आरोपों से क्षुब्ध पीओ डूडा केएस परिहार ने तत्काल कार्यदायी एजेंसी के गौरव को तलब किया। साथ ही शशांक को भी विकास भवन बुलाया गया।




लाभार्थी से सामना होते ही शशांक के हाव-भाव बदल गए। इनकार के बाद परियोजना अधिकारी के तेवर देखते हुए शशांक ने वसूली की बात स्वीकार की। केएस परिहार ने शशांक समेत हाल के दिनों में आए अन्य सर्वेयरों की शिकायतों को ध्यान में रखते हुए तत्काल सभी को कार्यमुक्त करने का आदेश दिया। परियोजना अधिकारी ने सर्वे से जुड़ी कार्यदायी संस्था के स्थानीय प्रमुख गौरव की भी जमकर क्लास लगाई क्योंकि गौरव ने परियोजना अधिकारी को जानकारी दिए बिना ही ठेके पर कई कर्मचारी रखे थे। औसानगंज के संतोष की एक शिकायत पर कार्यदायी संस्था के कर्मचारी तलब हुए तो एक के बाद एक कर कई मामले सामने आने लगे। पता चला कि लखनऊ से भी एक प्लानर सर्वे टीम आई है। उसके कर्मचारी भी खुलेआम लाभार्थियों से अवैध धन वसूल रहे हैं। डीपीआर, सर्वे व जिओ टैगिंग का कांट्रेक्ट लेने वाली कंपनियों के कर्मचारी खुलेआम पैसे मांग रहे हैं। दोपहर बाद मामला डीएम तक पहुंच गया। डीएम ने प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए जांच कर दोषी लोगों के खिलाफ मुकदमा कायम करने का आदेश दिया है।

## गोंडा-बहराइच के लिए चलाएं ट्रेन

**गोंडा,** गोंडा-बहराइच रेल मार्ग के उच्चीकरण के कारण दो सालों से ठप रेल सेवाओं के संचालन की मांग तेज होने लगी है। जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारियों ने ट्रेन का संचालन शुरू करने की मांग को लेकर राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन सीआरओ को दिया है। कांग्रेस पार्टी के जिलाध्यक्ष डॉ बीएल चौबे व शहर अध्यक्ष अब्दुल रहमान की अगुआई में सोमवार को कांग्रेसियों ने कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि गोंडा-मैलानी रेल प्रखंड मीटरगेज पर गोंडा से बहराइच के बीच 65 किलोमीटर की लाइन को आमान परिवर्तन कर बड़ी लाइन में बदलने का काम पूरा हो चुका है। रेल संरक्षा आयुक्त ने इसका निरीक्षण कर हरी झंडी दे दी, बावजूद इसके ट्रेनों का संचालन नहीं हो पा रहा है। जिससे आम लोगों को काफी दिक्कतें आ रही हैं। कांग्रेसियों ने कहा है कि दस दिनों के भीतर ट्रेन का संचालन शुरू नहीं हुआ तो आंदोलन किया जाएगा। बाद में मांगों से संबंधित ज्ञापन सीआरओ को सौंपा गया। इस अवसर पर ओबैदुरर्हमान, अब्दुल तालिब रैनी, पिंटू सैनी, अजय कुमार रस्तोगी, इमरान खां, अनीस नाना, सुभांगी पांडेय, अमित शुक्ल सहित अन्य मौजूद थे।

# गोरखपुर में बच्चों को स्कूल ले जा रही टाटा मैजिक नाले में पलटी, कई घायल

**गोरखपुर,** पिपराइच थाना क्षेत्र के कुरमौल उर्फ बड़हरा के पास मंगलवार को स्कूली बच्चों से भरी टाटा मैजिक नाले में पलट गई। वाहन में सवार एक दर्जन बच्चे मामूली रूप से चुटहिल हो गए। सूचना मिलते ही अभिभावक मौके पर पहुंचे और अपने बच्चों को लेकर घर चले गए। सभी बच्चे कुसम्ही क्षेत्र के रहने वाले हैं। मंगलवार सुबह बच्चे टाटा मैजिक वाहन में सवार होकर मदरसा वर्षीया अलिया स्कूल कुरमौल उर्फ बड़हरा में पढ़ने जा रहे थे। स्कूल से पहले ही नाला है। वाहन जैसे ही वहां पहुंचा उसके स्टेयरिंग का राड टूट गया और पलटते हुए वाहन नाले में जा गिरा। इस बीच खेत में काम कर रहे ग्रामीणों ने वाहन पलटते हुए देखा तो वह तुरंत मौके पर पहुंच गए और सभी बच्चों को सकुशल बचा लिया।



# गोमती नदी का बढ़ रहा जलस्तर

**जौनपुर,** नगर के बीच से गुजरी आदि गंगा गोमती का जलस्तर बढ़ गया है। जिससे शाही पुल के नीचे स्थित शिव मंदिर के पास पानी पहुंच गया है। इससे काफी समय से पानी की कमी से जूझ रहे नदी में पर्याप्त मात्रा में पानी आ गया। आस-पास के लोगों की माने तो यह जलस्तर तीन-चार दिनों में करीब आठ फीट पर पहुंच गया है। गोमती नदी में भीषण गर्मी होने के कारण पानी काफी कम था। जिससे आम आदमी के साथ पशु-पक्षियों के लिए पानी की समस्या होती थी। इसके बाद जिला प्रशासन की तरफ से गोमती नदी में सिल्ट



सफाई का कार्य भी कराया गया। इसके अलावा बरसात में पानी आने पर वर्तमान में गोमती का जलस्तर बढ़कर करीब आठ फीट के पास पहुंच गया। इससे गोपी घाट व हनुमान घाट की सीढ़ियों पर भी पानी पहुंच गया है। बढ़े हुए जलस्तर का कारण बारिश के पानी को बताया जा रहा है। इसके साथ जलकुंभी भी साथ में आ गई है। यह नजारा लोगों के लिए काफी आनंदित करने वाला है। अब पानी बढ़ने पर आस-पास घरों के बच्चे जलक्रीडा कर रहे है। पानी कम होने पर सद्भावना पुल या साही पुल पर खड़ा होने पर सिर्फ दुर्गन्ध ही आता था।

## हत्यारोपित की जमानत अर्जी खारिज

**मऊ,** अबोध बच्ची का अपहरण कर हत्या करने के मामले में आरोपित महिला राजेश्वरी देवी की जमानत अर्जी जिला एवं सत्र न्यायाधीश जयश्री आहूजा खारिज कर दिया। जिला जज ने यह आदेश बचाव पक्ष और एसपीओ के तर्कों को सुनने तथा केस डायरी का अवलोकन करने के बाद पारित किया। मामला मधुबन थाना क्षेत्र का है। लोकीपुर गांव निवासी रामकिशुन पुत्र बलिराम की तहरीर पर अज्ञात लोगों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज हुई। वादी का कहना है कि उसकी लड़की शिवानी उम्र एक वर्ष नौ माह 30 मई 2018 की शाम को सात बजे घर के सामने से अचानक गायब हो गई। तीन जून 2018 को उसका शव मिला । विवेचना के दौरान पुलिस ने गांव की ही राजेश्वरी देवी का नाम प्रकाश में लाया। मामले में आरोपी राजेश्वरी देवी पत्नी रामकिशुन की ओर से जमानत के लिए अर्जी दी गई थी। जिसे दोनों पक्षों को सुनने के बाद अपराध की गंभीरता को देखते हुए अर्जी खारिज कर दिया।

# समस्याओं को लेकर डीएम के साथ अपनादल एस ने की बैठक

**सिद्धार्थनगर,** कल अपना दल एस की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में प्रदेश अध्यक्ष अपना दल एस युवा मंच हेमंत चौधरी के नेतृत्व में संपन्न हुई। इस बैठक में जिला अधिकारी ,अपर जिलाधिकारी, अपर पुलिस अधीक्षक सहित जिले के कई अधिकारी मौजूद रहे। इस बैठक में हेमंत चौधरी ने पार्टी की जिला कार्यकारिणी की तरफ से जन समस्याओं को उठाएं। जिसमें उन्होंने कहा कि अपना दल एस के पदाधिकारियों की सुनवाई थानों में और तहसीलों में नहीं होती है जिस पर जिला अधिकारी और अपर पुलिस अधीक्षक दोनों लोगों ने पार्टी के सभी पदाधिकारियों के नाम की लिस्ट लेकर सभी थानों और तहसीलों पर भेजने का आश्वासन दिया। कहा कि भवानीगंज थाना और ढेबरूआ थाना के थानाध्यक्ष के ऊपर आरोप लगाया कि अगर हम लोग फोन करते हैं तो वे अभद्रता के साथ पेश आते हैं। जिस पर अपर पुलिस अधीक्षक मुन्ना सिंह ने कहा कि यदि वह ऐसा करते पाए जाते हैं तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। जिला अधिकारी कुणाल सिल्कू ने सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी। लोगों की समस्याएं का निदान मौके पर कर दिया जिले में खराब स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर प्रदेश अध्यक्ष हेमंत चौधरी ने मुख्य जिला चिकित्सा अधिकारी को भी बैठक में बुलाया था। लेकिन वह बैठक में नहीं आए जिस पर उन्होंने कड़ी आपत्ति व्यक्त की। जिला अध्यक्ष आत्माराम पटेल जिला उपाध्यक्ष लवकुश चौधरी जिला मीडिया प्रभारी शेषमणि प्रजापति महिला मंच जिला अध्यक्ष अंजली चौधरी जिलाध्यक्ष युवा मंच अनिल चौधरी, अनूप यादव, रामदास मौर्या, संजय यादव, उमेश यादव सहित जिले के एवं विधानसभा स्तर के सभी पदाधिकारी मौजूद रहे



## रिक्शा चालकों ने किया प्रदर्शन

**आजमगढ़,** आरटीओ द्वारा आटो रिक्शा को भी 15 साल चलाने की बैधता दिए जाने सहित छह सूत्रीय मांगों को लेकर उत्तर प्रदेश आटो रिक्शा चालक समिति के पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट भवन के सामने प्रदर्शन किया। साथ ही मंडलायुक्त एवं जिलाधिकारी को प्रार्थना पत्र देकर समस्या निस्तारण की मांग की। अध्यक्ष कृपाशंकर पाठक ने कहा कि रिक्शा चालक व मालिक बेरोजगारी से जूझते हुए ऋण लेकर आटो रिक्शा व ई-रिक्शा चलाकर परिवार की आजीविका चलाते हैं। शासन द्वारा ट्रक से लेकर आटो रिक्शा तक एक समान फिटनेस पर बिलंब शुल्क 50 रुपए प्रतिदिन कर दिया गया है। फिटनेस पूरा होने के पहले ही विभाग द्वारा एक हजार रुपए की अवैध वसूली की जा रही है। कहा कि शासन द्वारा आटो रिक्शा पर फिटनेस का शुल्क 50 रुपए प्रतिदिन एवं फिटनेस की निर्धारित तिथि के एक सप्ताह पहले एक हजार रुपए की वसूली बंद की जाए। आटो रिक्शा को 15 साल तक चलाने के लिए बैधता प्रदान की जाए।

# २३ बीघा जमीन नदी में समाई

**सीतापुर (सुल्तानपुर),** क्षेत्र में नदियों की कटान का कहर जारी है। घाघरा व शारदा नदी का जलस्तर कल भी स्थिर रहा लेकिन नदियों का कटान का सिलसिला जारी रहा। गौलोक कोड़र के कोनी गांव के पास घाघरा नदी व म्योढ़ी छोलहा के पासिनपुरवा के पास शारदा, हरखी बेहड़ के पास शारदा नदी खेतों का तेजी से कटान कर रही है। दोनों नदियों ने 23 बीघा कृषि भूमि काट दी। देखते ही देखते यह भूमि नदी की लहरों में समा गई। पिछले एक सप्ताह के अंदर दोनों नदियों की कटान में कुल 191 बीघा कृषि भूमि नदी में समा चुकी है। धीरे-धीरे कटान घरों की ओर बढ़ रही है। इससे नदी तटवर्ती गांवों में दहशत बढ़ गई है। म्योढ़ी छोलहा के पासिनपुरवा में शारदा नदी तेज गति से कटान कर रही है। यहां आठ बीघा खेत कट गए। ताहपुर के निवासी किसान रामनाथ, बैजनाथ, प्रहलाद, राम लखन, सुरेश आदि के खेतों में गन्ना, मक्का, मेंथा, धान की फसल खड़ी थी जो देखते ही देखते शारदा नदी में समा गई। गौलोक कोड़र के कोनी गांव में घाघरा नदी के आगोश में 15 बीघा खेत समा गए। भगवती, गुरु प्रसाद, मनोहर, जवाहर, खुलेराज, राम मनोहर, कैलाश के खेत कट गए। इनमें भी गन्ना, धान व मक्का की फसलें थी। गौलोक कोड़र के प्रधान देश राज यादव ने बताया कि शारदा नदी का जलस्तर तीन दिन से नहीं बढ़ा लेकिन कटान करने की गति जारी है। इससे ग्रामीणों में दहशत बढ़ गयी है। म्योढ़ी छोलहा के प्रधान जगदीश यादव ने बताया कि शारदा नदी लगातार कटान कर रही है। कटान जारी रही तो लोगों के घर जद में आ जाएंगे।

## कुएं में गिरी वृद्धा को ग्रामीणों ने निकाला

**चोपन(सोनभद्र),** थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत सिंदुरिया में रात एक वृद्ध महिला कुएं में गिर गई। ग्रामीणों की मदद से सोमवार की सुबह उसे सही-सलामत बाहर निकाल लिया गया। रविवार की रात आठ बजे शिव मंदिर के समीप स्थित कुएं में बुड़की (65) पत्नी रामधनी कुएं में गिर गयी। बताया गया कि नींद आने के कारण वृद्धा गिरी। कुएं से आवाज आता सुन गांव के ही मुन्ना यादव जब कुएं के अंदर झांके तो वृद्धा को देख सन्न रह गये। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों द्वारा अथक प्रयास के बाद वृद्धा को बाहर निकाला गया। उन्हें उपचारार्थ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चोपन में भर्ती कराया गया।

# मुन्ना बजरंगी के शूटर का आत्मसमर्पण

**फैजाबाद,** माफिया मुन्ना बजरंगी की हत्या के बाद उसके गुर्गों में दहशत बढ़ने लगी है। पुलिस को चकमा देने वाले माफिया के गुर्गे अब जेल की राह पकड़ना मुनासिब समझ रहे हैं। वांछित शूटर अभिनव सिंह ने भी जेल की राह पकड़ ली है। अभिनव ने न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया है। जिला पंचायत सदस्य रेखा चौधरी के पति रामचंद्र की हत्या के इरादे से आए अभिनव सिंह व धनेश यादव को एसटीएफ ने गत 17 फरवरी को गिरफ्तार किया था। एसटीएफ ने खुलासा किया था कि दोनों मुन्ना बजरंगी के शूटर हैं, और उसी के इशारे पर रामचंद्र की हत्या के इरादे से आए थे। इस



मामले में रामचंद्र की ओर से भी मुकदमा दर्ज कराया गया है, जिसमें मुन्ना बजरंगी व उनके सहयोगियों में कटेहरी ब्लाक प्रमुख अजय सिपाही, गाजीपुर जेल में बंद रिंकू सिंह, अभिनव व धनेश को नामजद किया गया है। कोतवाली नगर में दोनों मुकदमे दर्ज हैं। अभिनव और धनेश जमानत पर छूट गए थे, लेकिन दो जुलाई को गैंगेस्टर की कार्रवाई के बाद धनेश ने पुनः जेल की राह पकड़ ली, जबकि अभिनव फरार चल रह था। नौ जुलाई को मुन्ना बजरंगी की बागपत जेल में हत्या के बाद उसका गिरोह सकते में आ गया। सरगना की हत्या के बाद उसके शूटर अभिनव सिंह ने भी जेल जाने में भलाई समझी। अधिवक्ता मार्तंड प्रताप सिंह का कहना है कि अभिनव ने न्यायालय में आत्मसमर्पण कर दिया है।

## अधिवक्ता हितों के लिए सदैव रहूंगा तत्पर-देवेंद्र

**देवरिया,** सत्ता में रहूं या विपक्ष में, अधिवक्ता हितों के लिए दल की परवाह किए बिना सदैव खड़ा रहूंगा। यह बातें विधान परिषद सदस्य देवेंद्र प्रताप सिंह दीवानी न्यायालय के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में अधिवक्ताओं को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि एडवोकेट वेलफेयर एक्ट की धारा 3 में संशोधन की आवश्यकता है। इसमें सभी अधिवक्ताओं के हित की बात होनी चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं है। धारा 7 में चालीस करोड़ रुपए प्रति वर्ष राज्य सरकार अधिवक्ता संगठनों को देती है, लेकिन वह रुपया कहां जा रहा है, हमें देखना होगा। धारा 13 में बिना अधिवक्ता संगठनों की राय लिए वर्ष 1998 की तत्कालीन सरकार ने स्टांप शुल्क दोगुना कर लिया, लेकिन अधिवक्ता के वेलफेयर की धनराशि दोगुनी नहीं हुई, जो कदापि तर्क संगत नहीं है। मैं चाहता हूं कि कचहरी से झोपड़ पट्टी को दूर किया जाए और सभी अधिवक्ता के लिए स्थायी चेंबर का निर्माण हो।

# चंदौली में बोरी की फैक्ट्री में आग, लाखों का नुकसान

**चंदौली,** मिनी महानगर (पंडित दीनदयाल नगर) इलाका अंतर्गत प्लास्टिक बोरी की फैक्ट्री में मंगलवार को भीषण आग लग गई। अग्निकाड इतनी भयावह रही कि दमकलकर्मियों को आग की लपटें ठंडी करने में दो घंटे से ज्यादा का वक्त लग गया। आपरेशन में एक बड़ा एवं एक छोटा फायरटेंडर लगाया गया था। अग्निकाड की मुख्य वजह शार्ट सर्किट बताई गई है। हादसे की बाबत फैक्ट्री प्रबंधन ने 50 लाख से ज्यादा के नुकसान की आशका जताई है। दिलचस्प मामला यह भी कि भीषण अग्निकाड के बावजूद इलाके के चौकी प्रभारी के अलावा कोई अधिकारी मौके पर नहीं पहुंच सका था। वाराणसी निवासी आरके चौधरी ने औद्योगिक नगर के फेज नंबर एक में प्लास्टिक की फैक्ट्री लगाई है। मंगलवार को कंपनी में रोज की ही तरह मजदूर काम कर रहे थे। उसी दौरान फैक्ट्री परिसर स्थित बोरा बनाने को रखे कच्चे माल वाले गोदाम से अचानक धुंआ निकलने लगा। कर्मचारियों की नजर पड़ी तो हो-हल्ला मचाते हुए आग बुझाने की जतन करने लगे। दरअसल, गोदाम में बारदाना (बोरा बनाने का कच्चा माल) के अलावा हजारों की तादाद में तैयार बोरिया पड़ी हुई थीं। कंपनी प्रबंधन को सूचना पहुंची तो दमकल विभाग को हादसे की बाबत सूचना दी जा सकी। कर्मचारी खुद के संसाधन से आग पर काबू पाने की कोशिश में जुट गए। दमकलकर्मी भी कुछ ही देर में दो गाड़ियां लिए पहुंच गए। लेकिन उससे पूर्व ही आग की ऊंची-ऊंची लपटें गोदाम से निकलने लगी थीं। कंपनी के प्रबंधक कौशल कुमार ने कहा कि अग्निकाड में 50 लाख से ज्यादा का नुकसान हुआ है।



# मंदार पुष्प से सजा बाबा दरबार, मनमोहक शोभा

**ज्ञानपुर (भदोही),** पवित्र श्रावण मास के उपलक्ष्य में सोमवार को शिवभक्त पूजन-अर्चन के साथ व्रत शुरू कर दिया। इसको लेकर जिले के विभिन्न शिवालयों में भक्तों की कतार लगी रही। शिवालयों की साफ- सफाई के साथ ही साथ सुरक्षा व्यवस्था मुस्तैद कर दिया गया है। स्थानीय हरिहरनाथ मंदिर पर सुबह से ही महिलाओं की भीड़ लगी रही। भोले भंडारी भगवान शिव का अतिप्रिय महीना सावन में इस वर्ष चार सोमवार ही पड़ेगा। इसलिए पांच सोमवार तक व्रत रखने वाले शिवभक्त आषाढ़ मास के अंतिम सोमवार को ही व्रत शुरू कर दिया है। इसके मद्देनजर शिवालयों को जहां आकर्षक ढंग से सजा दिया गया। बाबा के दर्शन पूजन करने के लिए महिलाएं थाल में भांग, धतूरा, समी पुष्प आदि लेकर शिवालयों में पहुंचने लगी तो देर शाम तक भीड़ लग गई। भागवान नागेंद्र के पवित्र मास सावन के आगमन को लेकर इंद्र भी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे। पूरे दिन रिमझिम फुहारों से तन- मन प्रफुल्लित हो रहा था। इसके अलावा गोपीगंज में बड़े शिव मंदिर, बाबा सेमराधनाथ आदि प्राचीन और पौराणिक शिवालयों में शिव भक्तों की लंबी कतार लगी रही। सावन मास को देखते हुए शिवालयों की साफ-सफाई भी करने में लोग जुटे रहे।

# मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतरे वरुणा एक्सप्रेस सहित कई ट्रेनें रद

**अमेठी,** वाराणसी तथा लखनऊ के व्यस्त रेल मार्ग पर कल देर रात अमेठी जिले में मालगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए। अकबरगंज रेलवे स्टेशन के पास इस हादसे से यह रेल मार्ग सुबह तक प्रभावित रहा। कई ट्रेन को दूसरे मार्ग से भेजा गया जबकि वरुण एक्सप्रेस सहित अन्य कई ट्रेन को रद कर दिया गया। लंबी मशक्कत के बाद करीब नौ बजे इस ट्रैक को दुरुस्त किया गया है। वाराणसी-लखनऊ रेलखंड पर कल देर रात अकबरगंज रेलवे स्टेशन पर मालगाड़ी का एक डिब्बा पटरी से उतर गया। हादसे में किसी भी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है। घटना की वजह से ट्रैक क्षतिग्रस्त होने से कई ट्रेन का आवागमन बाधित रहा। यहां लखनऊ डीआरएम ने मौके पर पहुंच कर घटना का जायजा लिया। तत्काल कई ट्रेन को रोका गया। अकबरगंज रेलवे स्टेशन के पास हुए इस हादसा के रेल प्रशासन में खलबली मच गई। रात में ही वहां पर तत्काल एलटीटी एक्सप्रेस को रोका गया। रेलवे के मुताबिक घटना सोमवार की रात दस बजे के बाद की है। जब कोयला लादकर मालगाड़ी संख्या यूपीएमटीएसएस अप लाइन से होकर बनारस से लखनऊ जा रही थी। तभी अकबरगंज स्टेशन से पहले ही मालगाड़ी की 51 वीं बोगी बेपटरी होकर ट्रैक पर एक किमी तक घिसटती चली गयी। स्टेशन मास्टर एसके सरोज ने रात के अंधेरे में तेज आवाज के साथ धूल उठती देख ट्रेन में तैनात गार्ड और चालक को सूचना देकर मालगाड़ी रोकने के लिए कहा।



# सपा के साथ एकजुट हो राजभर समाज-रमाशंकर विद्यार्थी

**संतकबीरनगर,** सपा ने ही राजभर समाज समेत सभी वर्ग के लोगों को सम्मान देने का कार्य किया है। भाजपा ने चुनाव में राजभर समाज को साथ लेने के बाद उनके हितों के लिए कुछ भी नहीं किया। लोकसभा चुनाव में सपा के साथ समर्थन के लिए राजभर समाज के लोग पूरी तरह से तैयार हैं। कल सपा के जिला कार्यालय पर राजभर समाज के लोगों की बैठक को संबोधित करते हुए पूर्व सांसद और सपा के राष्ट्रीय महासचिव रमाशंकर विद्यार्थी (राजभर) ने यह बातें कही। उन्होंने कहा कि युवा नेता अखिलेश यादव ने सर्व समाज को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य करके खुद को साबित किया है। मंहगाई और भ्रष्टाचार को लेकर भाजपा सरकार पूरी तरह से फेल हो चुकी है। विधानपरिषद सदस्य रामजतन राजभर ने कहा कि जनता के सामने भाजपा की पोल खुल चुकी है। राजभर समाज के लोग पूरी तरह से सपा के साथ खड़े हैं। बैठक को रघुबीर राजबंशी और दर्जा प्राप्त पूर्व राज्यमंत्री रामदुलार आदि ने भी संबोधित किया। जिलाध्यक्ष गौहर अली ने कहा कि महागठबंधन के साथ लोकसभा के चुनाव में पूर्ण बहुमत की सरकार बनने का मार्ग प्रशस्त हो चुका है। पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष संतोष यादव व जिला उपाध्यक्ष केडी यादव ने कहा कि राजभर समाज के लिए; सपा ने करके दिखाया है मौका मिलने से और भी आगे बढ़ाया जाएगा। युवाओं के लिए सपा ने रोजगार और शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवाकर सबको सही दिशा देने का कार्य किया था।

क्रांति समय

# ट्रान्सपोर्टर्स की हड़ताल, व्यापारियों को 1200 करोड़ से अधिक का नुकसान

## मार्केट में पार्सल का जमावड़ा, पार्सलरखने की समस्या बढी

**सूरत।** ट्रान्सपोर्टर्स की देशव्यापी अनिश्चितकालीन अवधि की हड़ताल मंगलवार को पांचवें दिन में प्रवेश कर चुकी है। वहीं हड़ताल को लेकर सूरत शहर के टेक्सटाइल मार्केटों के व्यापारियों को अभी तक 1200 करोड़ से अधिक रूपए का नुकसान होने लगा है। इसके अलावा आगामी श्रावण महीने को लेकर मिले ऑर्डरों की बुकिंग रद्द होने का डर सता रहा है। वहीं दूसरी तरफ हड़ताल के कारण मजदूर और कारीगरों की रोजगारी को भी प्रभाव पड़ रहा है। पेट्रोल-डिजल सहित टॉल टैक्स से मुक्ति सहित विविध मांगों के साथ ट्रान्सपोर्टर्स देशव्यापी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर उतरे हैं। वहीं हड़ताल को लेकर टेक्सटाइल उद्योग को काफी नुकसान हो रहा है। कपड़ा व्यापारी की जानकारी के अनुसार अभी तक कपड़ा उद्योग को अंदाजन 1200 करोड़ रूपए से अधिक का नुकसान होने लगा है। हड़ताल के कारण मार्केट में पार्सलों की ढेर लगी है। मार्केट में पार्सल रखने की समस्याएं उत्पन्न हो रही है। श्रावण महीने को लेकर व्यापारी ग्राहकी की आशा रख रहे हैं और इसे लेकर व्यापारियों ने ऑर्डर के अनुसार पार्सल तैयार किया है किंतु हड़ताल के कारण रूके हैं। वहीं व्यापारियों को ये ऑर्डर रद्द होने का भी डर सता रहा है। उल्लेखनीय है कि फिलहाल कपड़ा उद्योग मंदी से गुजर रहा है। वही व्यापारी सूत्रों ने जानकारी दी हैं कि हड़ताल जल्दी नहीं समेटा गया तो टेक्सटाइल उद्योग की हालत अधिक खराब हो सकती है।

## रांदेर में मकान से लाखों की चोरी

**सूरत।** शहर के रांदेर इलाके में व्यापारी के मकान से नगद रकम और गहने सहित कुल 1.47 लाख रूपए के सामान की चोरी होने की तहरिर्र पुलिस थाने में दर्ज करवायी गई है। रांदेर पुलिस सूत्रों के अनुसार ताडवाडी सांई आशिष सोसायटी निवासी गौरांग कौशिक देसाई व्यवसायी हैं। गौरांग के ससुर का मकान ताडवाडी आशिष सोसायटी में स्थित है। गत रविवार को रात चोरों ने उसके ससुर के मकान घुसकर चोरी की। चोरों ने मकान के पीछे की खिड़की का लोहे की ग्रील तोड़कर अंदर प्रवेश किया और तिजोरी से नगद रकम और गहने सहित कुल 1,47,000 रूपए का सामान चोरी कर फरार हो गये। घटना की शिकायत पुलिस थाने में दर्ज करवायी गई है। पुलिस मामला दर्ज कर आगे की जांच कर रही है।

## कक्षा ९ से १२ की परीक्षा पद्धति में परिवर्तन का निर्णय

**अहमदाबाद ।** एनसीईआरटी के पाठयपुस्तकों को लागू करने के बाद माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक की परीक्षा पद्धति में शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ से उल्लेखनीय परिवर्तन करने का सरकार ने निर्णय किया है । कक्षा-९ में शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ और कक्षा १० में शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० से वार्षिक परीक्षा में ८० अंक और समग्र मूल्यांकन के बजाय आंतरिक मूल्यांकन के २० अंक होंगे । शैक्षणिक वर्ष २०१८-१९ से कक्षा ११ विज्ञान प्रवाह में वार्षिक परीक्षा में ८० अंक और आंतरिक मूल्यांकन के २० अंक होंगे । शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० से कक्षा १२ विज्ञान प्रवाह की बोर्ड की परीक्षा में १०० अंक के प्रशनपत्र में २० प्रतिशत अंक हेतुलक्षी प्रश्न होंगे । गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की मान्यता वाली माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूलों में जून २०१८ से कक्षा-९ में गणित, विज्ञान और टेक्नोलॉजी तथा अंग्रेजी प्रथम भाषा और कक्षा ११ में विज्ञान प्रवाह में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, जीवविज्ञान, गणित और अंग्रेजी प्रथम भाषा में एनसीईआरटी के पाठयपुस्तकों को लागू किया गया है जिसकी वजह से शैक्षणिक वर्ष २०१९-२० से कक्षा १०-१२ विज्ञान प्रवाह में इसी तरीके से पाठयपुस्तकों को लागू करने की वजह से राज्य सरकार ने कक्षा-९ से १२ की परीक्षा पद्धति में महत्व के परिवर्तन किए गए है । परीक्षा पद्धति में यह महत्व के परिवर्तन के कारण विद्यार्थियों में लेखन कौशल का विकास होगा । जेईई और नीट जैसी परीक्षा में विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन कर सके इसके लिए यह निर्णय किया गया है । शिक्षामंत्री चुडासमा ने बताया है कि, एनसीईआरटी के पाठयपुस्तकों को लागू किया गया है। बदले गये पाठयपुस्तकों की वजह से परीक्षा पद्धति में परिवर्तन किया गया है । २०१८ से कक्षा-१ से ९ में प्रथम कसौटी के ५० अंक, दूसरी कसौटी के ५० अंक और वार्षिक परीक्षा के ८० अंक होंगे । हेतुलक्षी प्रश्नों, निबंधलक्षी प्रश्नों आदि को शामिल करना पड़ेगा ।

## सूरत में अगले महीने दो दिवसीय वास्तु ज्ञानगोष्ठी का आयोजन

**सूरत।** वास्तु फाउन्डेशन की ओर से अगले महीने सूरत में दो दिवसीय वास्तु ज्ञानगोष्ठी का आयोजन किया गया है। विख्यात वास्तुशास्त्री पंडित खुशदीप बंसल की शिष्या तनुश्री कप्टा के मार्गदर्शन में 4 और 5 अगस्त को सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक वास्तुगोष्ठी कार्यक्रम होगा। तनुश्री कप्टा का कहना है कि व्यापार-उद्योग में सफलता, घर और सांसारिक जीवन में आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, शांति, समृद्धि हमेशा बनी रहे और किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो तथा नए व्यापार-उद्योग के आयोजन और विकास, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी समस्याओं के समाधान के लिए वास्तु का बहुत महत्व है।

सूरत। पांडेसरा में दक्षेश्वर मंदिर के पास सी.एन.जी पंप पर रिक्शा में सी.एन.जी भरवाने के लिए लाईन में लगी रिक्शा।

## लिंबायत में कारखाने से लाखों का सामान चोरी

**सूरत।** लिंबायत के गोविंदनगर में स्थित कारखाने से चोर शर्ट का कपड़ा, शर्ट का बटन टांकने का मशीन समेत 1.81 लाख रूपए का सामान चोरी कर फरार हो गए। लिंबायत पुलिस सूत्रों के अनुसार बमरोली रोड आशापुरी सोसायटी निवासी ज्ञानेन्द्र लालचंद सिंह का लिंबायत गोविंद नगर में कारखाना हैं। गत दिनों चोरों ने कारखाना का दरवाजा तोड़कर अंदर प्रवेश किया और खाते से शर्ट के कपड़े नग 2800, शर्ट का बटन टांकने का मशीन नग 2 और मोटर सहित कुल 1,81,000 रूपए के सामान की चोरी कर फरार हो गए। पुलिस ने ज्ञानेन्द्र सिंह की शिकायत के आधार पर मामला दर्ज कर आगे की जांच शुरू की हैं।

### शहर में बारिश की हल्की से भारी बारिश

# शहर में बूंदाबांदी बारिश के बीच मॉनसून का माहौल रहा

## आगामी २४ घंटे में अहमदाबाद सहित उत्तर और मध्य गुजरात में हल्की से भारी बारिश होने का पूर्वानुमान

अहमदाबाद । चार दिन पहले अहमदाबाद शहर में मेघगर्जना के साथ भारी बारिश शुरू होने के बाद बारिश ने कुछ विराम लेकर मंगलवार को सुबह से अहमदाबाद शहर और इसके आसपास के क्षेत्रों में बारिश हुई है । अहमदाबाद शहर में पूरे दिन के दौरान बारिश की हल्की से भारी बारिश जारी रही, जिसके कारण निचलेवाले क्षेत्रों में जल भराव हो गया । दूसरी तरफ शहर में बारिश के माहौल को लेकर ट्राफिक चक्काजाम की स्थिति के बीच सार्वजनिक मार्गो पर गड्ढे होने की समस्या चालू हो गई । इस दौरान मौसम विभाग द्वारा आगामी २४ घंटे के दौरान राज्य के उत्तर और मध्य गुजरात में भारी होने का पूर्वानुमान जताया गया है। जिसमें अहमदाबाद शहर में भी भारी बारिश होने की संभावना व्यक्त की गई है । इसके अलावा राज्य के कई हिस्सों में हल्की से भारी बारिश होने की संभावना है । मंगलवार को अहमदाबाद शहर में सुबह से ही अहमदाबाद शहर और इसके आसपास के क्षेत्रों में बारिश शुरू हो गई । पूरे दिन के दौरान यह बूंदाबांदी बारिश का दौर चालू रहा । शहर की जनता बारिश के माहौल को लेकर काफी खुश हो गई । शहर के लोगों को उमस से राहत मिली है और बारिश के ठंडक का अनुभव किया । मंगलवार को शहर के एसजी हाईवे, वेजलपुर, जोधपुर, वस्त्रापुर, सेटेलाइट, नारणपुरा, नवरंगपुरा, वासणा, मणिनगर, सीटीएम, हाटकेश्वर, मेघाणीनगर, बापूनगर,नरोडा, नारोल सहित के क्षेत्रों में हल्की से लेकर भारी बारिश दर्ज की गई ।

## राज्य के 20 बांधों पर हाईअलर्ट, 6 जलाशयों पर अलर्ट जारी

**अहमदाबाद।** गुजरात में हो रही बारिश के चलते राज्य के 20 जलाशयों के लबालब होने पर हाईअलर्ट और 6 बांधों पर अलर्ट जारी किया गया है। राज्य के बाढ़ नियंत्रण विभाग से मिली जानकारी के अनुसार पिछले 24 घंटों के दौरान राज्य में व्यापक बारिश के कारण 20 जलाशयों पर हाईअलर्ट जारी किया गया। 6 जलाशयों पर अलर्ट और 11 डेमों पर चेतावनी जारी की गई है। राज्य के नवसारी जिले के जूझ और केलिया, अमरेली के वडिया और धातरवाडी, जामनगर के कंकावटी, पूना, उन्ड-3 और फुलझर-1, भावनगर के रोजकी, मालण और बागड़, गिर सोमनाथ के मच्छुन्द्री, हिरण-1 और हिरण-2, जूनागढ़ के मधुवंती और अंबाजल, पोरबंदर का अमीरपुर, तापी का दोसवाडा, राजकोट का मोतीसर, भरुच के ढोली समेत कुल 20 जलाशयों पर हाईअलर्ट जारी किया गया है। दक्षिण गुजरात स्थित सरदार सरोवर बांध में वर्तमान में 132980 एमसीएफटी पानी का संग्रह है, जो कुल संग्रह क्षमता का 39.80 प्रतिशत है।

### सफाई कर्मचारियों की हड़ताल को लेकर सख्त

## सार्वजनिक मार्गों पर कचरे डालने वाले पर शिकायत

अहमदाबाद । अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के सफाई कर्मचारियों की हड़ताल का मंगलवार दूसरा दिन है तब अधिकतर कर्मचारियों ने हड़ताल रखकर मुंडन कराकर अनूठा विरोध दर्ज कराया । हालांकि मंगलवार की हड़ताल के दौरान सफाई कर्मचारियों ने सीमा पार करके शहर के विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक मार्गों पर गंदे कचरे डालकर गंदगी फैलाने का गंभीर अपराध किया था, जिसे लेकर अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन के शासकों में भारी नाराज गी है । विशेष करके म्युनिसिपल कमिशनर विजय नेहरा सफाई कर्मचारियों की गंदी हरकत से नाराज हो गये और उन्होंने अधिकारियों को जिम्मेदार सफाई कर्मचारियों के विरूद्ध शिकायत दर्ज कराने के लिए तुरंत आदेश जारी किए । जिसकी वजह से शहर के वटवा, रामोल, खोखरा सहित के पुलिस स्टेशन में दोषी सफाई कर्मचारियों के विरूद्ध शिकायत दर्ज करायी गई थी । अहमदाबाद म्युनिसिपल कमिशनर विजय नेहरा ने सफाई कर्मचारियों की हड़ताल को लेकर सख्त रवैया अपनाया है और उन पर कृपा करने के मुड में नहीं है । उनके मत से सफाई कर्मचारी समय पर उपस्थित नहीं होते हैं फिर भी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए हड़ताल पर चले गये है ।

महादेव मीडिया
रोहताश यादव 9924144499, 7015339195
वीजिटिंग कार्ड, बिल बुक, लेटर पैड, बेनर, पोस्टर, आदि का डिजाइन बनवाने के लिए संपर्क करें। (हिन्दी, गुजराती)
हिन्दी, गुजराती न्युज पेपर डिजाईन करवाने के लिए संपर्क करें।
304 केवल कॉम्पलेक्ष नवा गाम, डिंडोली, उधना सूरत।

स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ऑफसेट एफपी. 149, प्लोट 26 खोडियार नगर, सिद्धीविनायक मंदिर के पास, (भाटेना) हॉ.सो. अंजना सूरत, गुजरात से मुद्रित, एवं 191 महादेव नगर, हरि नगर-2 के पीछे, उधना, जिला-सूरत, गुजरात से प्रकाशित, **संपादक :- सुरेश मौर्या** फोन नं. (9879141480) **RNI.No. : GUJHIN/2018/75100**, E-mail: krantisamay@gmail.com